REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2022

माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों व विकलांगों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्गों के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन

मनीष कुमार हुरमाडे[1] , प्रो. एस.के. त्यागी[2]
[1]शोधार्थी (शिक्षा), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर.
[2]भूतपूर्व विभागाध्यक्ष व संकायाध्यक्ष (शिक्षा), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर.

1.1.परिचय :–

विद्यालय में विद्यार्थी, अध्यापक, पाठ्यचर्या, आदि शिक्षा के अभिन्न अंग होते हैं। पाठ्यचर्या के अन्तर्गत समस्त वांछित गतिविधियाँ आती है, जो विद्यालय के तत्वावधान में संचालित होती है। पाठ्यचर्या की पूर्ति के हेतु अध्ययन मण्डल/पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति द्वारा विभिन्न पाठ्यपुस्तकें अनुशंसित की जाती है, जिनसे अपेक्षा की जाती है, कि वे संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं मनोगत्यात्मक उद्देश्यों की पूर्ति करेगी। अतः, अध्ययन एवं अध्यापन की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तकें का महत्वपूर्ण स्थान होता है। पाठ्यपुस्तकें ही शिक्षक के स्तर को प्रतिबिम्बित तथा स्थापित करती है। पाठ्यपुस्तकों से जहाँ एक ओर शिक्षक लाभान्वित होते हैं, वहीं दूसरी ओर बालकों के लिये भी पाठ्यपुस्तकों के अनेक लाभ हैं। नवीन शिक्षकों तथा छात्र–छात्राओं के लिये तो पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग करना बहुत ही आवश्यक है। अतः शिक्षण को गुणात्मक एवं प्रभावी बनाने में पाठ्यपुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

वर्तमान में देश की जनसंख्या में कुछ ऐसे समूह या वर्ग भी हैं, जिनकी शिक्षा व्यवस्था हेतु सरकार भी प्रायः चिन्तित होकर विशेष प्रयास करती है, जैसे– अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक, महिलाएँ व विकलांग आदि। संविधान में अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों और कमजोर वर्गों के शैक्षिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा देने और सामाजिक कमियों को दूर करने के लिए सुरक्षा और संरक्षण की व्यवस्था की गयी है तथा इन वर्गों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा में सुधार के लिए शासन द्वारा समय–समय पर विभिन्न कक्षाओं की पाठ्यचर्या व उनमें पढ़ाये जाने वाले विषयों की विषयवस्तु में भी सुधार किया जाता है। भाषा व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को समाज की संरचना, गतिविधियां व समाज में होने वाले परिवर्तनों का चित्रण करती है। भारत की सामाजिक संरचना अनेक विविधताएं लिए हुये है। यहाँ विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों, जातियों, रीति–रिवाजों व भाषाओं के लोग निवास करते हैं। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि हमारी भाषा व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या व विषयवस्तु सभी धर्मों, संस्कृतियों, जातियों, रीति–रिवाजों व भाषाओं का प्रतिनिधित्व करें। पाठ्यचर्या की विषयवस्तु में किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व उचित अनुपात में नहीं होने पर उस वर्ग के लोगों में असंतुष्टि का भाव उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में पाठ्यचर्या की विषयवस्तु में उस वर्ग के प्रतिनिधित्व को उचित स्थान दिया जाना आवश्यक है जो वंचित है, कमजोर है और शासन भी उसके शैक्षिक स्तर में सुधार हेतु सतत प्रयत्नशील है।

प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों व विकलांगों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्गों के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण जानने के लिए नियोजित किया गया है, जिसमें मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित व मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित म.प्र. की कक्षा 6ठी से 8वीं तक की सामाजिक विज्ञान व हिन्दी भाषा(भाषा भारती) की पाठ्यपुस्तकों को शामिल किया गया।

1.2.अध्ययन का औचित्य :–

शिक्षा प्रदान करने के साधन के रूप में पाठ्यपुस्तकों का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इनमें विषयवस्तु का व्यवस्थित संकलन कर विद्यार्थियों को अध्यापन कराया जाता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए यह आवश्यक है, कि पाठ्यपुस्तकों में संकलित विषयवस्तु देश के सभी धर्मों, जातियों, वर्गों व सम्प्रदायों आदि का प्रतिनिधित्व करें। चूंकि समाज की जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय व संस्कृति आदि की विशेषताओं पर आधारित विषयवस्तु सामाजिक विज्ञान व भाषा से सम्बन्धित विषयों के अन्तर्गत समाहित की जाती है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की जनसंख्या के आधार पर भारत में अनुसूचित जाति, जनजाति बाहुल्य प्रदेश में इनकी संख्या 30 प्रतिशत है, इसी आधार पर विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या भी होगी। अतः हम कह सकते हैं कि यदि शिक्षा गाँव व समाज के एक बड़े हिस्से की संस्कृति, भाषा, रहन–सहन, इतिहास के अनुरूप नहीं होगी तो इसके कारण इन वर्गों के विद्यार्थी आत्मिक एवं स्वरूचि से शिक्षा प्राप्त नहीं कर पायेंगे।

इसी प्रकार विकलांग वर्ग एवं अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के सरोकारों का भी ध्यान पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु में रखा जाना अतिआवश्यक है। विद्यालय में उपस्थित सामान्य विद्यार्थियों के साथ–साथ अल्पसंख्यक एवं विकलांग वर्ग के विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य के अनुसार भी विद्यालयीन पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु का होना बेहद जरूरी है। क्योंकि इन विशेष वर्गों एवं विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक गाँव तक विशेष विद्यालय नहीं खोले जा सकते हैं, इसके बजाय सामान्य विद्यालयों में ही उनके अनुरूप संसाधनों का उपयोग कर प्रत्येक गाँव के इन सभी वर्गों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है।

इस समस्या का समाधान करने के लिये शिक्षा एवं शिक्षण व्यवस्था के अंतर्गत पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु में इन वर्गों का समावेश कितना है? और कितना होना चाहिए? इसका पता लगाकर इसमें सुधार करना अति आवश्यक है। यह विशेषकर कक्षा 6ठी से कक्षा 10वीं की हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु के अंतर्गत होना चाहिए, क्योंकि हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान ये दोनों ही विषय व्यक्ति से व्यक्ति, समाज से समाज, व्यक्ति को समाज से तथा व्यक्ति को संस्कृति से जोड़ने हेतु आधार प्रदान करते हैं। इसलिये हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान से संबंधित पाठ्यपुस्तकों का पुनर्निरीक्षण करने की आवश्यकता है।

'द हिन्दू' में 7 सितम्बर 2013 को "Academics, eminent citçens dismayed over biases in textbooks" शीर्षक से प्रकाशित आलेख में शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े विद्वान भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि, देश की पाठ्यपुस्तकें, NCF 2005 के मानदण्डों के अनुरूप नहीं है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से देश की शिक्षा व्यवस्था में कई आधारभूत सुधार किए गए है, जिसके फलस्वरूप समाज के कमजोर व वंचित वर्गों की शिक्षा की स्थिति में सुधार आया है। वर्तमान में इन वर्गों के कई प्रतिनिधि अच्छी शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुये देश के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। किसी भी समाज के शिक्षित प्रतिनिधि ही उस समाज की दशा व दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। क्योंकि इन्हें अपने समाज की वर्तमान स्थिति, संभावनाओं व अपेक्षाओं का पर्याप्त ज्ञान व समझ होती है।अतः भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु इन वर्गों के चित्रण के प्रति इन वर्गों के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन आवश्यक है, ताकि विदित हो सके कि– क्या वास्तव में पाठ्यपुस्तकें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक व विकलांग वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है? यदि करती है तो किस सीमा तक? तथा उक्त वर्गों की सामाजिक स्थिति के किन–किन पहलुओं का प्रतिनिधित्व करती है? आदि जानने हेतु इस अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं, अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक एवं विकलांग वर्ग व मूल्यांकन आदि पर कई शोध हो चुके हैं जैसे–सोलंकी(1977) ने प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों में

जनजातियों की स्थिति पर, एहमद(1980) ने स्वतंत्रता के पश्चात जिले के पिछड़े मुस्लिम वर्ग, गैर मुस्लिम पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जातियों में सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक अवसरों में परिवर्तन पर, शर्मा(1985) ने प्राथमिक स्तर पर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं भाषा की पाठ्य पुस्तकों में उपयोग की गयी भाषा की व्यापकता पर, पिपरइया(1989) ने भाषा एवं सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की स्थिति पर, भरत (1994) ने सामाजिक अध्ययन कक्षा 8वीं के दो विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में वर्णित सामाजिक पूर्वाग्रहों का पाठ्यक्रम विकास हेतु विष्लेषण व मूल्यांकन पर, सिंह (2002) ने भाषा एवं सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की स्थिति पर, वर्मा (2012) ने मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा अनुशंसित कक्षा 9वीं की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक का शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन पर शोध कार्य किए।

उपर्युक्त सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से विदित होता है कि– भाषा, सामाजिक अध्ययन व अन्य पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों की स्थिति, अल्पसंख्यक, विकलांग व मूल्यांकन आदि पर सीमित शोध कार्य हो चुके हैं किन्तु "माध्यमिक स्तर पर भाषा व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों व विकलांगों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्गों के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन" पर वर्तमान तक कोई ठोस शोध कार्य नहीं हो पाया। अतः उक्त शीर्षक पर शोर्ध कार्य करने की आवश्यकता प्रतिपादित हुई।

1.3.समस्या कथन :–

प्रस्तुत अध्ययन का कथन निम्नानुसार था–

माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों व विकलांगों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्गों के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन

1.4. उद्देश्य :–

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य थें –

- माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्ग के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जनजाति के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्ग के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अल्पसंख्यकों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्ग के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में विकलांगों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्ग के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना।

1.5. तकनीकी शब्दों की परिभाषा–

शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों को निम्न परिभाषाओं के अनुसार प्रयोग किया गया है –

- माध्यमिक स्तर की शिक्षा– 'माध्यमिक स्तर की शिक्षा से आशय प्राथमिक शिक्षा के पश्चात तथा हाईस्कूल शिक्षा के पूर्व की शिक्षा अर्थात कक्षा 6ठी से 8वीं तक की शिक्षा से है।' यहीं अर्थ राज्य शिक्षा केंद्र, मध्यप्रदेश शासन द्वारा भी स्वीकार किया गया है।
- शिक्षक प्रतिनिधि– मध्यप्रदेश के माध्यमिक स्तर (कक्षा 6ठी से 8वीं तक) के शासकीय विद्यालयों में सेवारत शोध हेतु चयनित वर्गों से संबन्धित शिक्षक।
- गैर शिक्षक प्रतिनिधि– शोध हेतु चयनित वर्गों के शिक्षा से संबन्धित अधिकारी, जनप्रतिनिधि व सामाजिक कार्यकर्ता।
- जनप्रतिनिधि– शोध हेतु चयनित वर्गों के सरपंच, जनपद पंचायत सदस्य, जनपद पंचायत अध्यक्ष, जिला पंचायत सदस्य व विधायक स्तर के जनप्रतिनिधि।

1.6. शोध परिसीमन–

प्रस्तुत शोध की परिसीमाएं निम्न थीं–

1. पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण हेतु मध्यप्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, भोपाल तथा मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल द्वारा प्रकाशित कक्षा 6ठी, 7वीं व 8वीं की हिन्दी व सामाजिक– विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण किया गया।
2. पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण हेतु कक्षा 6ठी, 7वीं व 8वीं में सत्र 2018–19 के दौरान पढ़ाई गई हिन्दी व सामाजिक–विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग किया गया है।

1.7.न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर की 'भाषा' व 'सामाजिक विज्ञान' की पाठ्यपुस्तकों की विषय वस्तु में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक व विकलांग वर्ग के चित्रण की स्थिति के प्रति प्रत्यक्षण प्राप्त करने हेतु न्यादर्श के रूप संबन्धित वर्गों के शिक्षकों, अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं का सोद्देश्य न्यादर्श विधि से चयन किया गया। शिक्षकों के अंतर्गत मध्यप्रदेश के माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों में सेवारत विभिन्न वर्गों से संबन्धित शिक्षकों का चयन किया गया। अधिकारियों के अन्तर्गत शासकीय विद्यालयों में सेवारत प्रधान पाठक, प्राचार्य, बीआरसी, बीईओ, डीपीसी व डीईओ स्तर के अधिकारियों का चयन किया गया। जनप्रतिनिधियों के अन्तर्गत जनपद पंचायत सदस्य, जनपद पंचायत अध्यक्ष, जिला पंचायत सदस्य व विधायक स्तर के जनप्रतिनिधियों का चयन किया गया। साथ ही सामाजिक कार्यकर्ताओं के अन्तर्गत समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं का भी चयन किया गया जसका वर्णन तालिका 1.0 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1.0 वर्गवार शिक्षक, अधिकारी, जनप्रतिनिधि व सामाजिक कार्यकर्ता के न्यादर्श आकार

क्र.	न्यादर्श	वर्ग				कुल योग
		अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अल्पसंख्यक	विकलांग	
1.	शिक्षक	38	42	32	37	149
2.	अधिकारी	24	18	09	03	54
3.	जनप्रतिनिधि	18	15	11	00	44
4.	सामाजिक कार्यकर्ता	16	09	10	06	41
कुल		96	84	62	46	288

1.8.शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित 'माध्यमिक स्तर की भाषा व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक व विकलांग वर्गों की स्थिति का चित्रण: शिक्षक व गैर शिक्षक प्रतिनिधियों से प्रत्यक्षण प्राप्त करने हेतु संरचित साक्षात्कार अनुसूची' का उपयोग किया गया। साक्षात्कार अनुसूची में चयनित वर्गों से संबंधित विभिन्न पहलुओं जैसे पाठ्यपुस्तकों में इन वर्गों के समुदाय की स्थिति का चित्रण, संस्कृति का चित्रण, समाज के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों का चित्रण, समाज की आकांक्षाओं; चुनौतियों व ज्वलंत समस्याओं का चित्रण, पाठ्यपुस्तकों के समावेशी प्रतिबिंब आदि पर आधारित कुल छः प्रश्न शामिल किए गए थे।

1.9.प्रदत्त–संकलन विधि

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा हिन्दी व सामाजिक–विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की विषय वस्तु में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक व विकलांग वर्ग के चित्रण की स्थिति के प्रति प्रत्यक्षण प्राप्त करने हेतु संबन्धित वर्गों के शिक्षकों, अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं से संपर्क कर उन्हें अपने शोध के उद्देश्य से अवगत कराया गया। उन्हें 'माध्यमिक स्तर की भाषा व सामाजिक

विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यकों व विकलांग वर्गों की स्थिति का चित्रणः संबधित वर्गों के शिक्षक, अधिकारी, जन प्रतिनिधि व सामाजिक कार्यकर्ता हेतु संरचित साक्षात्कार अनुसूची' प्रेषित की गई व साक्षात्कार हेतु समय लिया गया। तत्पश्चात कुछ साक्षात्कार दाताओं से उनकी उपलब्धता और सुविधा के अनुसार निर्धारित समय पर गूगल मीट के माध्यम से तथा कुछ साक्षात्कार दाताओं से प्रत्यक्ष संपर्क के माध्यम से साक्षात्कार लेकर प्रदत्त संकलित किए गए।

1.10. प्रदत्त—विश्लेषणः

भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों व विकलांगों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्गों के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण से संबन्धित प्रदत्त विश्लेषण हेतु विषयवस्तु विश्लेषण, आवृत्ति तथा प्रतिशत का उपयोग किया गया।

1.11.अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षों को नीचे उद्देश्यवार प्रस्तुत किया गया है —**शोध का प्रथम उद्देश्य था**—'माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्ग के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना।'

प्रथम उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं—

- अनुसूचित जाति वर्ग के 79.2 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना हैं, कि कक्षा 6वीं, 7वीं व 8वीं की हिन्दी व सामाजिक—विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु में उनके समुदाय की स्थिति का वास्तविक चित्रण नही किया गया है तथा इससे वे संतुष्ट नहीं हैं।
- अनुसूचित जाति वर्ग के 83.3 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना हैं, कि वे पाठयपुस्तकों की विषयवस्तु में रीति—रिवाज, रहन—सहन, विरासत, महापुरुषों की जीवनगाथा व भाषा के चित्रण से पूर्णतः संतुष्ट नही हैं, क्योंकि पाठयपुस्तक में इनके वर्ग के प्रसंगों का समावेश नही किया गया है।
- अनुसूचित जाति वर्ग के 92.7 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना हैं, कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनप्रतिनिधियों की सोच, मानसिकता, कुशलताओं कार्य व अध्ययन के क्षेत्र में निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं, लेकिन यह परिवर्तन पाठयपुस्तकों में नहीं झलकते हैं। लगभग सभी प्रतिनिधि का मानते हैं, कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रतिनिधियों की सोच, मानसिकता, कुशलताओं कार्य व अध्ययन के क्षेत्र में निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं, लेकिन यह परिवर्तन पाठयपुस्तकों में नहीं झलकते हैं।
- अनुसूचित जाति वर्ग के 86.5 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना हैं, कि अनुसुचित जाति समुदाय से संबन्धित ज्वलंत समस्याएँ व आहत करने वाले प्रसंग आये दिन घटित होते हैं, लेकिन पाठयपुस्तकों की विषयवस्तु में समाज की आकांक्षाओं, चुनौतियों, ज्वलंत समस्याओं व आहत करने वाले प्रसंगों के चित्रण की स्थिति का समावेश नही किया गया है।
- अनुसूचित जाति वर्ग के 78.1 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना हैं, कि पाठयपुस्तकें इस प्रकार हो कि सभी वर्गों के महत्वपूर्ण प्रसंगों को उनमें उचित रूप से जगह मिले, लेकिन प्रचलित पाठयपुस्तकों में यह विशेषताएँ नहीं दिखाई देती है।
- अनुसूचित जाति वर्ग के 87.5 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना हैं, कि सभी वर्गों के शैक्षिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, व्यवसायिक, आर्थिक, सामाजिक आधारों पर वास्तविक चित्रण के रूप में पाठयपुस्तकों में परिवर्तन होना चाहिए।

शोध का द्वितीय उद्देश्य था—

'माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जनजाति के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्ग के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना।

द्वितीय उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं–

- अनुसूचित जनजाति वर्ग के 82.1 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि वर्तमान समय मे पाठ्यपुस्तकों में जनजाति वर्ग की स्थिति के चित्रण उनके वर्ग की स्थिति से मेल नही खाते। इस समुदाय की स्थिति का चित्रण उनके सामाजिक व सांस्कृतिक पक्षों के अनुसार नहीं प्रस्तुत किया गया। अतः पाठ्यपुस्तकों में अनुसुचित जनजाति वर्ग की स्थिति के चित्रण से वे संतुष्ट नहीं हैं।
- अनुसूचित जनजाति वर्ग के 100 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों में उनके वर्ग के रीति–रिवाज, परंपरा, संस्कृति, रहन–सहन, भाषा, विरासत, महापुरुषों की जीवन–गाथाओं आदि के आधार पर प्रतीत होता है कि, उनके वर्ग के संदर्भ में पाठ्यपुस्तकों की प्रकृति समावेशी नहीं है। कहीं–कहीं इस वर्ग के कुछेक प्रतिनिधियों का चित्रण देखने को मिलता है किन्तु वह भी अपर्याप्त ही लगता है।
- अनुसूचित जनजाति वर्ग के 77.4 प्रतिशत प्रतिनिधियों का ऐसा कहना था कि जनजाति वर्ग के प्रतिनिधियों के द्वारा किये गये कार्यों, योगदानों व उपलब्धियों आदि को पाठ्यपुस्तकों में स्थान नही दिया गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके वर्ग के प्रतिनिधियों की विचारधारा, मानसिकता, कुशलताओं, कार्य व अध्ययन के क्षेत्र में निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं लेकिन पाठ्यपुस्तकों में यह परिवर्तन दिखाई नहीं दे रहे हैं।
- अनुसूचित जनजाति वर्ग के 65.5 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों में उनके वर्ग की आकांक्षाओं, ज्वलंत समस्याओं व आहत करने वाली घटनाओं से संबंधित प्रसंगों को किसी भी जनजाति वर्ग के पाठों में/ विषयवस्तु में नही दर्शाया गया है। समुदाय अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है तथा आज भी गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, बेरोजगारी, नशा, कुपोषण व मूल्य आधारित गुणों का अभाव जैसी ज्वलंत समस्याएँ व चुनौतियाँ हैं। लेकिन पाठ्यपुस्तकों में इस संदर्भ में कोई भी अभिप्रेरणात्मक प्रसंग शामिल नही किया गया है।
- अनुसूचित जनजाति वर्ग के 79.8 प्रतिशत प्रतिनिधियों ने कहा, कि पाठ्यपुस्तकें ऐसी होनी चाहिए कि उनमें समाज के सभी वर्गों का उचित प्रतिनिधित्व दिखाई दें। प्रचलित पाठ्यपुस्तकों में सभी वर्गों के साथ–साथ अनुसुचित जनजाति वर्ग का प्रतिबिंब भी उचित रूप से नहीं झलकता है। जनजाति वर्ग से संबंधित जानकारियाँ प्रचलित पाठ्यपुस्तकों में नगण्य पायी गयी। अतः पाठ्यपुस्तकों को सम्पूर्ण वर्गों के प्रतिबिम्बित करने वाली विशेषता न होने के कारण इस वर्ग के प्रतिनिधियों ने पाठ्यवस्तु के प्रति असंतुष्टि प्रकट की है।
- अनुसूचित जनजाति वर्ग के 70.2 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि विद्यार्थियों की सामाजिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति, व्यवसायिक स्थिति, सांस्कृतिक व धार्मिक स्थिति को सुदृढ़ बन सके। परिणामस्वरुप प्रतिनिधियों ने असंतुष्टि प्रकट की है। अधिकतर प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि, पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों की सामाजिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति, व्यवसायिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति व धार्मिक स्थिति को सुदृढ बना सके। परिणामस्वरूप प्रतिनिधियों ने असंतुष्टि प्रकट की है।

शोध का तृतीय उद्देश्य था–

'माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में अल्पसंख्यकों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्ग के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना।

तृतीय उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं–

- अल्पसंख्यक वर्ग के 71 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठयपुस्तकों में अल्पसंख्यक वर्ग की स्थिति का चित्रण सामान्य तौर पर ही किया गया है। अधिकतर जानकारियाँ अल्पसंख्यक वर्ग के इतिहास से ली गयी हैं जो उनका स्वर्णकाल था। इन प्रसंगों के चित्रण से वे कुछ हद तक संतुष्ट हैं, किन्तु पाठयपुस्तकों में अल्पसंख्यक समुदाय की वास्तविक स्थिति के चित्रण का अभाव है। अल्पसंख्यक वर्ग की स्थिति उतनी अच्छी नही है जितनी अच्छी पाठयपुस्तकों में प्रदर्शित की गयी है। अतः इसमें सुधार की आवश्यकता है।
- अल्पसंख्यक वर्ग के 77.4 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठयपुस्तकों की प्रकृति समावेशी होना चाहिए। पाठयपुस्तकों में अल्पसंख्यक वर्ग की संस्कृति (रिति रिवाज, रहन–सहन, विरासत, महापुरुषों की

जीवनगाथा व भाषा) व अन्य पहलुओं की जानकारी के अन्तर्गत त्यौहार, जन्मोत्सव, कला, परम्पराएँ व आपसी संबंधों आदि का वर्णन मिलता है इसलिये वे संतुष्ट है। जबकि कुछ प्रतिनिधियों का मानना यह भी है कि विषयवस्तु में उनकी संस्कृति का चित्रण तो मिलता है किन्तु वह वर्तमान संदर्भों में यह अपर्याप्त है, इसलिए वे इस चित्रण से पूर्णतः संतुष्ट नहीं हैं।

- अल्पसंख्यक वर्ग के 100 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों में वर्तमान समय के प्रतिनिधियों के विचारों, कुशलताओं व समाजहित में किये गये कार्यों को स्थान नही दिया गया है; केवल इतिहास को ही स्थान दिया गया है। पाठ्यपुस्तक लेखन प्रक्रिया में इस वर्ग के लेखक व साहित्यकारों को कुछ हद तक स्थान दिया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अल्पसंख्यक वर्ग के प्रतिनिधि शिक्षा, व्यापार, मनोरंजन, सामाजिक, राजनीति आदि प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं इन सभी का पाठ्यपुस्तकों में उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए जिससे कि इस वर्ग के विद्यार्थियों को प्रेरणा मिल सके।
- अल्पसंख्यक वर्ग के 61.3 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि उनके वर्ग की ज्वलंत समस्याओं को पाठयपुस्तकों में उचित तरीके से स्थान नही दिया गया है। केवल अल्पसंख्यक वर्ग के अन्तर्गत आने वाले महापुरुषों की जीवनगाथाओं को प्रदर्शित किया गया है, ज्वलंत समस्याओं को पर्याप्त स्थान नहीं मिला है। अल्पसंख्यक वर्ग की ज्वलंत समस्याएँ जैसे उनके रहन–सहन, उनके रोजगार तथा उनकी शिक्षा की समस्याओं पर कोई भी प्रेरक प्रसंग पाठयपुस्तक में नही पाया गया है ।
- अल्पसंख्यक वर्ग के 72.6 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तके सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करें। इसके लिए आवश्यक है कि इन पाठ्यपुस्तकों में सभी वर्गों के सशक्त व कमजोर पहलुओं का चित्रण सही रूप में किया जाए तथा इनसे जुड़े प्रसंगों को पाठ्यपुस्तकों में अनिवार्य रूप से स्थान प्रदान किया जाए। ये सभी प्रसंग विद्यार्थियों को शांति व भाईचारे के लिए प्रेरित करें, उनमें मूल्यों का विकास करने में सहायक हो, जिससे वे भविष्य में एक बेहतर समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सके। वर्तमान की पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार की विषयवस्तु का अभाव दिखाई देता हैं।
- अल्पसंख्यक वर्ग के 62.9 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठयपुस्तकों में सभी वर्ग के विद्यार्थियो के भविष्य को तैयार करने, एक अच्छा नागरिक बनाने इत्यादि से संबन्धित प्रसंगों को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। पाठयपुस्तकों में ऐसे परिवर्तन होने चाहिए जो उनकी वर्तमान समस्याओं के समाधान के साथ–साथ भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

शोध का चतुर्थ उद्देश्य था–

'माध्यमिक स्तर पर भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में विकलांगों के चित्रण के प्रति सम्बन्धित वर्ग के शिक्षक तथा गैरशिक्षक प्रतिनिधियों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना।

चतुर्थ उद्देश्य से संबन्धित निष्कर्ष निम्न हैं–

- दिव्यांग वर्ग के 63 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तुओं में दिव्यांग समुदाय की स्थिति का चित्रण प्रभावी एवं आत्मविश्वासी रूप से प्रस्तुत किया गया है तथा वे वर्तमान की पाठयपुस्तकों में दिव्यांग वर्ग के प्रतिनिधित्व से संतुष्ट हैं।
- इस वर्ग के 67.4 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों की प्रकृति समावेशी होनी चाहिए। दिव्यांग वर्ग से सम्बधित कोई संस्कृति नही होती है, किन्तु दिव्यांग वर्ग के विभिन्न प्रकारों, उनकी जरूरतों, समाज में उनके प्रति आम दृष्टिकोण आदि पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तुत किया जा सकता था, किन्तु इनसे संबन्धित कोई भी प्रसंग पाठ्यपुस्तकों में शामिल नहीं किया गया है। अतः पाठ्यपुस्तकों की प्रकृति पूर्ण रूप से समावेशी प्रतीत नहीं होती है, इसलिये वे कुछ सीमा तक ही संतुष्ट हैं।
- दिव्यांग वर्ग के 91.3 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दिव्यांग वर्ग के प्रतिनिधियों के द्वारा किये जाने वाले कार्यों को पाठ्यपुस्तकों में जगह नही दी गयी है। वर्तमान समय में दिव्यांग वर्ग के प्रतिनिधियों द्वारा समाजहित में किये गये कार्य/कुशलताओं/ उपलब्धियों/विचारों को पाठ्यपुस्तकों में स्थान प्राप्त नहीं हो पाया है, अतः उन्हें स्थान मिलना ही चाहिए। पाठ्यपुस्तकों में दिव्यांग वर्ग के

प्रतिनिधियों व उनके कार्यों को उचित अवसर ही नहीं दिया जाता, जिससे उनके कार्य व योगदान पाठ्यपुस्तकों में नही झलकते हैं।

- इसी प्रकार इस वर्ग के 76.1 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु में दिव्यांग वर्ग से जुड़ी ज्वलन्त समस्याओं व आहत करने वाले प्रसंगों का पाठ्यपुस्तकों में समावेशित नही किया गया है।
- इसी प्रकार इस वर्ग के 73.9 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु में सभी वर्गों का समावेश होना चाहिए, ताकि उन वर्गों का पाठ्यपुस्तकों में उचित प्रतिबिंब बन सके। प्रचलित पाठ्यपुस्तको में सभी वर्गों का प्रतिबिम्ब उनके राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक, रक्षा, स्वास्थ्य, कला अथवा अन्य विशेष कार्यों के योगदानों का समावेश होना चाहिए। पाठ्यपुस्तकं प्रत्येक वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल जीवन स्तर के सुधार करने योग्य होनी चाहिए।
- इसी प्रकार इस वर्ग के 78.3 प्रतिशत प्रतिनिधियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तकों में सभी वर्गो की स्थिति का आकलन कर, दिव्यांग वर्ग के प्रसंगों को महत्वपूर्ण रूप से जगह देना चाहिए, जिससे पाठयपुस्तकें दिव्यांग विद्यार्थियों के भावी जीवन के लिए अधिक उपयोगी हो सके।

1.12.शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ निम्न हैं–

शैक्षिक प्रशासक/ नीतिकार – शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यक्रम निर्धारकों से यह अपेक्षा की जा सकती है, कि माध्यमिक स्तर कक्षा 6ठी, 7वीं व 8वीं की हिन्दी व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक व विकलांग वर्गों से सम्बन्धित विषयवस्तु का पुनर्निर्धारण व पुनर्गठन किया जाए, जिसमें इनके शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, आर्थिक व अन्य क्षेत्रों से संबन्धित वर्तमान वास्तविक स्थिति व समस्याओं से संबन्धित विषयवस्तु को स्थान दिया जाए। इन विषयों की पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु के निर्धारण व पुनर्गठन की प्रक्रिया में इन वर्गों से संबन्धित विद्वानों तथा विभिन्न आयोगों व संगठनों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित किया जाए व पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु में उनके वर्ग के प्रतिनिधित्व पर उनके विचारों को महत्व दिया जाए।

पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता – प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष, पाठ्यक्रम निर्माणकर्ताओं के लिए माध्यमिक स्तर की कक्षा 6ठी, 7वीं व 8वीं की हिन्दी व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में सहायक हो सकते हैं। पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित विषयवस्तु में इन वर्गों की शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, आर्थिक व अन्य क्षेत्रों से संबन्धित वर्तमान वास्तविक स्थिति व समस्याओं से संबन्धित प्रकरणों का समावेश कर इन वर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रति आकर्षित किया जा सकता है।

पाठ्यपुस्तक लेखन – प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष, माध्यमिक स्तर की कक्षा 6ठी, 7वीं व 8वीं की हिन्दी व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के लेखकों के लिए भी महत्वपूर्ण दिशा प्रदान कर सकता है। लेखकगण पाठ्यपुस्तक के पाठों की विषयवस्तु में इन वर्गों के महत्वपूर्ण पक्षों जैसे–उनके शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, आर्थिक व अन्य क्षेत्रों से संबन्धित वर्तमान स्थिति पर आधारित प्रसंगों को सम्मिलित कर सकते हैं जिसमें इन वर्गों के पात्रों के व्यक्तित्व, विचार, प्रेरक प्रसंगों, समाज व देशहित के कार्यों, समस्याओं व उनके समाधानों, भविष्य के अवसरों आदि का प्रभावी चित्रण हो। जिससे पाठ्यपुस्तके विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक, धार्मिक, सौंदर्यात्मक, राष्ट्रीय व वैश्विक मूल्यों के विकास में और अधिक योगदान दे सके।

पाठ्यपुस्तक मूल्यांकनकर्ता/समिति – प्रस्तुत शोध निष्कर्ष पाठ्यपुस्तक मूल्यांकनकर्ताओं के लिए भी उपयोगी है। माध्यमिक स्तर पर हिन्दी व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें विषयवस्तु के माध्यम से, विद्यार्थियों को समाज की संरचना, समाज की विभिन्न परिस्थितियाँ, समाज में व्यक्ति का महत्व, व्यक्ति के सामाजिक व राष्ट्रीय उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक विरासत, रीति–रिवाजों, परम्पराओं, कला, साहित्य, समाज की वर्तमान स्थिति, समाज व राष्ट्र की समस्याएँ, ज्वलंत मुद्दे आदि का ज्ञान प्रदान करती है। जो विद्यार्थियों के सामाजिक व संवेगात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। चूंकि शोध के निष्कर्षों से विदित होता है कि हिन्दी व सामाजिक विज्ञान की वर्तमान पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक व विकलांग

वर्गों के सबंध में इनमें से कई बिन्दुओं का समावेश नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध निष्कर्ष पाठ्यपुस्तक मूल्यांकनकर्ताओं को इन बिन्दुओं के आधार पर पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन करने में सहयोग प्रदान करेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कोरी, डी.(2006). मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन. अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध, दे.अ.वि.वि.,इन्दौर.
2. चौरे, आर.(1994). आदिवासी ग्रामीण शिक्षा के परिवेश में समस्याओं का अध्ययन, नवेगांव पंचायत, जिला छिन्दवाड़ा, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध, दे.अ.वि.वि.,इन्दौर.
3. पाल, एच.आर. एवं पाल, आर.(2006). पाठ्यचर्या – कल, आज और कल. शिप्रा प्रकाशन, दिल्ली.
4. पिपरइया, एल. (1989) माध्यमिक स्तर की भाषा एवं सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों में महिलाओं की स्थिति. अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध, दे.अ.वि.वि., इन्दौर.
5. मुकर्जी, आर.एन. (2012). भारतीय समाज एवं संस्कृति. विवेक प्रकाशन, दिल्ली.
6. यादव, एस.(1988). धर्म निरपेक्षता और भारतीय परम्परा. नार्दर्न बुक सेन्टर, नई दिल्ली.
7. वर्मा, एन. (2012). मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा अनुशंसित कक्षा 9वीं की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक का शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन. अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध, दे.अ.वि.वि., इन्दौर.
8. सिंह, व्ही. (2002). भाषा एवं सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन. अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध, दे.अ.वि.वि.,इन्दौर.
9. Agrawal, S. P. (2002). Development of Education in India. Vol.-V, Concept Publishing Company, New Delhi.
10. Bhatt, D. B. (2006). Curriculum Reforms - Change and Continuity. Knishka Publishers, New Delhi.
11. NCERT (2006). Sixth Survey of Research in Education. Vol I, National Council of Educational Research & Training, New Delhi.
12. NCERT (2007). Sixth Survey of Research in Education. Vol II, National Council of Educational Research & Training, New Delhi.
13. Pal, H. R. (1981). Curriculum Construction for Developing Social Skills in Teachers for Establishing Closer Contact with Community. Unpublished Ph. D. (Edu.) Thesis, Indore University, Indore.